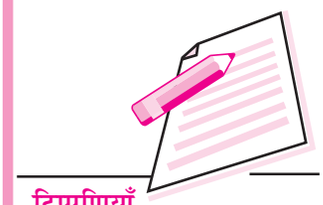

12

अर्थशास्त्र : एक परिचय

अर्थशास्त्र एक वृहत विषय है, जो उत्पादन, उपभोग, बचत, विनियोग, मुद्रास्फीति, रोजगार, बेरोजगारी, राष्ट्रीय आय, प्रतिव्यक्ति आय, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, जीवन की गुणवत्ता, मौद्रिक नीति, राजकोषीय नीति आदि से संबंधित प्रसंगों का अध्ययन करता है। इनकी सूची का कोई अंत नहीं है। इस विषय की अधिक जानकारी और आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए यह जानना आवश्यक है किसी भी आर्थिक तथ्य का स्वभाव क्या है और संबंधित समस्या का क्षेत्र/शाखा क्या है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप:

- अर्थशास्त्र का अर्थ जान पाएंगें;
- वास्तविक और आदर्श अर्थशास्त्र में अंतर कर पाएंगें;
- व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर और उनके घटकों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र की व्याख्या कर पाएंगें; तथा
- व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र की एक-दूसरे पर निर्भरता ज्ञात कर पाएंगें।

12.1 अर्थशास्त्र का अर्थ

'अर्थशास्त्र' शब्द दो ग्रीक शब्दों 'ओकोस' और 'नेमीन' शब्दों से लिया गया है। इसका अर्थ है–गृहस्थ का नियम अथवा कानून। अर्थशास्त्र का संबंध इस प्रकार केवल इस बात से नहीं है कि एक राष्ट्र अपने संसाधनों का उपयोग विभिन्न उपयोगों में किस प्रकार करती है, बल्कि उस प्रक्रिया का भी अध्ययन करना है, जिससे इन संसाधनों की उत्पादकता को और बढ़ाया

जा सके तथा उन कारकों का भी जिन्होंने भूतकाल में संसाधनों के उपयोग की दर में उच्चावचन उत्पन्न किए हैं। ब्रिटिश अर्थशास्त्री रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार की है।

'अर्थशास्त्र एक विज्ञान है, जो उद्देश्यों और वैकल्पिक उपयोग वाले सीमित साधनों से संबंधित मानव व्यवहार का अध्ययन करता है।'

रॉबिन्स की परिभाषा अर्थशास्त्र के क्षेत्र को व्यापक बनाती है। यह 'छांट की समस्या' है, जो उपभोग, उत्पादन और विनिमय के क्षेत्रों में व्यापक है। उदाहरण के लिए, उपभोक्ता को विभिन्न वस्तुओं के उन संयोगों को चुनना होता है, जिनसे उसे सर्वाधिक संतोष मिलता है। इसी प्रकार एक उत्पादक भी उत्पादन के उसी आकार का चुनाव करेगा, जिससे उसे अधिकतम लाभ मिले। नोबेल पुरस्कार प्राप्त प्रो. सेमुएल्सन ने अर्थशास्त्र की परिभाषा निम्न प्रकार दी है–

''अर्थशास्त्र इस तथ्य का अध्ययन है कि व्यक्ति और समाज, मुद्रा का प्रयोग करते हुए या न करते हुए, दुर्लभ उत्पादक साधनों का चुनाव जिनके वैकल्पिक उपयोग हो सकते हैं, का उपयोग विभिन्न वस्तुओं के समयगत उत्पादन और उनको वर्तमान उपभोग में और भविष्य में विभिन्न व्यक्तियों और समाज के वर्गों में किस प्रकार वितरित करते हैं।

12.2 वास्तविक बनाम आदर्श अर्थशास्त्र

आर्थिक परिस्थितियों से संबंधित मुद्दों की विवेचन एवं आर्थिक समस्याओं के निदान हल ढूंढ़ने की चर्चा करते समय अर्थशास्त्री बहुधा वास्तविक और आदर्श अर्थशास्त्र की बात करते हैं। वास्तविक अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषण का अध्ययन करता है, जो तथ्यों और सांख्यिकीय आंकड़ों पर आधारित हैं। जब किसी आर्थिक तथ्य का सांख्यिकीय आंकड़ों की सहायता से विवेचन किया जाता है तो इसे हम वास्तविक अर्थशास्त्र कहते हैं। इस प्रकार वास्तविक अर्थशास्त्र का संबंध 'क्या है' से है। दूसरी तरफ आदर्श अर्थशास्त्र 'क्या होना चाहिए' की व्याख्या करता है। आदर्श अर्थशास्त्र मूल्यगत निर्णयों पर आधारित है, जो किसी निर्णय पर पहुंचने के लिए आवश्यक है। समाज के लिए नीति-निर्धारण संबंधी बातें, अधिकांशत: आदर्श अर्थशास्त्र के अंतर्गत आते हैं। भारत की वर्ष 2011 की जनसंख्या का उदाहरण लें। यह एक तथ्य है कि 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की जनसंख्या 121 करोड़ के आसपास थी। चूंकि यह तथ्य आंकड़ों पर आधारित है, इस कारण यह विवरण वास्तविक अर्थशास्त्र से संबंधित है, लेकिन जब हम जनसंख्या वृद्धि से संबंधित समस्याओं की अध्ययन करें तो अर्थशास्त्री और नीति-निर्माता अनेक हल सामने रखते हैं, जैसे–भारत को जनसंख्या वृद्धि पर, परिवार नियोजन आदि अपनाकर नियंत्रित करना चाहिए। ये बातें आदर्श अर्थशास्त्र के अंतर्गत आती हैं, क्योंकि इन नीतियों पर बहस हो सकती हैं। नागरिकों और अर्थव्यवस्था द्वारा कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जब इनको आंकड़ों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है तो यह वास्तविक अर्थशास्त्र कहलाता है। जब समस्याओं का समाधान चाहते हैं तो मूल्यगत निर्णय लिए जाते हैं और चर्चा होती है। यह आदर्श अर्थशास्त्र के अंतर्गत आता है।

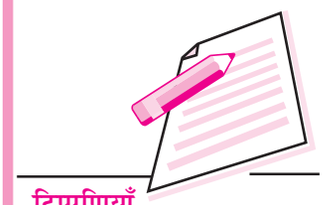

पाठगत प्रश्न 12.1

निम्न में वास्तविक अथवा आदर्श कथनों की पहचान कीजिए:

1. सरकार को बेरोजगार नवयुवकों को बेरोजगारी भत्ता देना चाहिए।
2. भारत की 27 प्रतिशत जनसंख्या गरीब वर्गों से संबंधित है।
3. भारत को अधिक आधारभूत संरचना के निर्माण के लिए विश्व बैंक से ऋण लेना चाहिए।
4. भारतीय रिजर्व बैंक को मुद्रा स्फीति को रोकने के लिए बैंक दर में वृद्धि करनी चाहिए।
5. भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंक दर 6 प्रतिशत तक बढ़ा दी है।

12.3 व्यष्टि अर्थशास्त्र बनाम समष्टि अर्थशास्त्र

वर्तमान में अर्थशास्त्र का अध्ययन दो भागों में किया जाता है–व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र।

व्यष्टि का अर्थ है–छोटा, सूक्ष्म। अत: जब अध्ययन अथवा समस्या एक इकाई या अर्थव्यवस्था के एक भाग से संबंधित होती है तो इस अध्ययन विषय को व्यष्टि अर्थशास्त्र कहा जाता है। समष्टि का अर्थ है–बड़ा। इस प्रकार जब अध्ययन संपूर्ण अर्थव्यवस्था अथवा संपूर्ण अर्थव्यवस्था के समुच्चयों से संबंधित होता है तो इस अध्ययन विषय को समष्टि अर्थशास्त्र कहा जाता है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र : व्यष्टि अर्थशास्त्र आर्थिक क्रिया की एक इकाई अथवा अर्थव्यवस्था की एक इकाई के भाग या एक से अधिक इकाई के छोटे समूह का अध्ययन है। ग्रीक शब्द 'माइक्रोस' से लिए गए शब्द 'माइक्रोस' का अर्थ है छोटा–यह व्यक्तिगत आर्थिक ऐजेंट के व्यवहार से संबधित है तथा वस्तुओं और सेवाओं की कीमत निर्धारण की क्रियाओं का नतीजा है। इस प्रकार इसे 'मूल्य सिद्धांत' भी कहा जाता है।

अर्थव्यवस्था की सूक्ष्म जानकारी किसी व्यक्ति, फर्म, घरेलू कार्य आदि की नीति निर्धारण में सहायक होती है (उत्पादन, उपभोग, मूल्य निर्धारण, मजदूरी दर आदि) में सहायता मिलती है। इस अध्ययन का उद्देश्य है कि उत्पादन, विनिमय और वस्तुओं के वितरण के व्यवहार प्रारूप और अंतर्संबंधों के विषय में भविष्यवाणी की जा सके। इस प्रकार, व्यक्तिगत आर्थिक इकाइयों के दृष्टिकोण से, संतुलन की स्थिति को प्राप्त करना व्यष्टिगत अर्थशास्त्र का उद्देश्य है।

इसके अतिरिक्त व्यष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन व्यक्तियों के व्यवहार प्रारूपों तथा फर्मों की आय वितरण, उत्पादन दक्षता और समग्र दक्षता प्राप्ति पर जोर देता है। दक्षता का अर्थ है उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच संसाधनों का अनुकूलतम आबंटन। जिससे वस्तुओं और सेवाओं की न अत्यधिक मांग और न अत्यधिक आपूर्ति। अर्थव्यवस्था की तीन केंद्रीय समस्याओं–क्या उत्पादन किया जाए, कैसे उत्पादन किया जाए और उनका वितरण कैसे किया जाए–सभी व्यष्टि अर्थशास्त्र की विषय सामग्री हैं।

पाठगत प्रश्न 12.2

निम्न में कौन कथन सत्य है–

(i) वस्तु की कीमत का निर्धारण

(ii) किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए

(iii) दोनों (अ) और (ब)

(iv) मात्र (अ)

समष्टि अर्थशास्त्र

समष्टि अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की एक शाखा है, जो किसी देश के आर्थिक समुच्चयों का अध्ययन करती है। समष्टि शब्द ग्रीक भाषा के शब्द 'माक्रोस' (Macro) से लिया गया है, जिसका अर्थ है–बड़ा। इस शब्द का प्रचार ब्रिटिश अर्थशास्त्री लार्ड जॉन मैनार्ड कींस की पुस्तक 'The General Theory of Employment Interest and Money', जो 1936 में प्रकाशित हुई, के प्रकाशन के पश्चात हुआ। 1929 की महान मंदी (Great Depression) ने अर्थशास्त्रियों को विषय को नए तरीके से सोचने के लिए मजबूर किया, जो चहुमुखी था। परिणामस्वरूप समष्टि अर्थशास्त्र सिद्धांत विकसित हुआ। इसे आय तथा रोजगार सिद्धांत भी कहा जाता है।

समष्टि अर्थशास्त्र सभी आर्थिक इकाइयों का समग्र विश्लेषण करता है, जिससे आर्थिक प्रणाली का पूर्ण चित्र प्राप्त हो जाए और बड़े पैमाने पर आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया जा सके। उत्पादन, मूल्य स्तर और रोजगार के घटक अर्थव्यवस्था में एक साथ कार्य करते हैं, जो यह व्यक्त करता है कि उनमें परस्पर निकट संबंध है। समष्टि अर्थशास्त्र में अर्थव्यवस्था के इन सभी घटकों को सम्मिलित रूप में देखा जाता है। ग्रहस्थ, फर्म, सरकार और विदेशी क्षेत्र। यह अर्थव्यवस्था को चार घटकों का संयोग मानता है–

समष्टि अर्थशास्त्र के विषय क्षेत्र में–बाजार व्यवस्था, कर प्रणाली, बजट नीतियां, मुद्रा पूर्ति की नीतियां, प्रशासन की भूमिका, ब्याज दर, मजदूरी, रोजगार और उत्पादन के प्रभाव का विश्लेषण किया जाता है। इसे आय सिद्धांत भी कहा जाता है। क्योंकि इसका संबंध संपूर्ण अर्थव्यवस्था और आर्थिक समस्याओं और उनके समाधान से है–जैसे बेरोजगारी, मुद्रा स्फीति, भुगतान संतुलन घाटे के कारण आदि।

पाठगत प्रश्न 12.3

1. लार्ड कींस द्वारा लिखित पुस्तक का नाम लिखिए।

2. निम्न में कौन समष्टि अर्थशास्त्र की विषय सामग्री है–

   (अ) मजदूरी दर (ब) एकाधिकार

   (स) मुद्रा स्फीति (द) बाजार कीमत

12.4 व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र की आपस में निर्भरता

समष्टि अर्थशास्त्र और व्यष्टि अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र के दो भाग हैं, लेकिन ये परस्पर असंबंधित नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, ये अंतर्संबंधित हैं। व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में निकट संबंध है। सभी व्यष्टि आर्थिक अध्ययन समष्टि आर्थिक चरों को अधिक अच्छे प्रकार से समझाने में सहायता प्रदान करते हैं। आप जानते हैं–अर्थव्यवस्था में जो परिवर्तन और प्रक्रियाएं होती हैं, वह विभिन्न प्रकार के उन छोटे-बड़े तथ्यों के कारण होती हैं, जो एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए, करों में वृद्धि समष्टि अर्थशास्त्र का निर्णय है, लेकिन इनका प्रत्येक फर्म की बचत पर प्रभाव, व्यष्टि विश्लेषण है। इसके अलावा इस बचत का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव समष्टि अर्थशास्त्र का विश्लेषण है।

एक और उदाहरण से भी इसे समझ सकते हैं। यदि हम जानते हैं कि वस्तुओं की कीमतें कैसे निर्धारित होती हैं और यह समझते हैं कि कीमत निर्धारण में क्रेता-विक्रेताओं की क्या भूमिका होती है तो हमें इस बात का विश्लेषण करने में सहायता मिलेगी कि संपूर्ण अर्थव्यवस्था में सभी वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य स्तर में परिवर्तन किस प्रकार होते हैं। इस संदर्भ में क्रेता-विक्रेताओं के व्यवहार का अध्ययन व्यष्टि अर्थशास्त्र से संबंधित है, जबकि संपूर्ण अर्थव्यवस्था में मूल्य स्तर की विश्लेषण समष्टि अर्थशास्त्र से संबंधित है। इसी प्रकार यदि पूरी अर्थव्यवस्था का अध्ययन करना चाहे तो हमें अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र के निष्पादन का अध्ययन करना होगा। प्रत्येक उत्पादन इकाई समूह अथवा क्षेत्र का अध्ययन व्यष्टि अर्थशास्त्र है। इसका विपरीत संपूर्ण उत्पादन इकाइयों या समस्त क्षेत्रों का एक साथ अध्ययन समष्टि अर्थशास्त्र है। इस प्रकार समष्टि अर्थशास्त्र और व्यष्टि अर्थशास्त्र दोनों अर्थशास्त्र के आपस में परस्पर संबंधित भाग हैं।

इस कारण अर्थव्यवस्था में व्यष्टि और समष्टि दोनों की अध्ययन अपरिहार्य है।

12.5 व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर

अर्थशास्त्र की इन दोनों शाखाओं में महत्वपूर्ण अंतर हैं, जो नीचे दिए गए हैं–

1. अध्ययन के पैमाने में अंतर : व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत आर्थिक इकाइयों से संबंधित अध्ययन किया जाता है, जबकि समष्टि अर्थशास्त्र समुच्यों का अध्ययन है।

2. अध्ययन के क्षेत्र में अंतर : समष्टि अर्थशास्त्र आय, रोजगार और सृवंद्धि संबंधी नीतियों के व्यापक स्तर से संबंधित है जबकि व्यष्टि अनुकूलतम साधन आबंटन और आर्थिक क्रियाओं जैसे–मूल्य निर्धारण से संबंधित समस्याओं और नीतियों का अध्ययन होता है।

3. कीमत और आय अवधारणाओं के महत्व में अंतर : व्यष्टि अर्थशास्त्र का विश्लेषण बाजार में वस्तुओं और सेवाओं की कीमत निर्धारण पर केन्द्रित रहता है। जबकि समष्टि अर्थशास्त्र का विश्लेषण संपूर्ण अर्थव्यवस्था में आय निर्धारण पर केन्द्रित रहता है। प्रत्येक वस्तु और सेवा का अपना बाजार होता है, जहां क्रेता और विक्रेता आपस में वस्तु की कीमत और मात्रा निर्धारित करने के लिए अंतर्क्रिया करते हैं। यह निर्णय व्यक्तिगत क्रेताओं द्वारा जो

वस्तु की मांग करते हैं तथा विक्रेताओं द्वारा जो इन वस्तुओं की पूर्ति करते हैं, व्यष्टि अर्थशास्त्र की विषय सामग्री है। दूसरी ओर संपूर्ण व्यवस्था की आय का निर्धारण, जिसमें सभी क्षेत्रों की आय सम्मिलित है, समष्टि अर्थशास्त्र की विषय सामग्री है।

4. अध्ययन की विधि में अंतर : व्यष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन आंशिक संतुलन से अधिक प्रभावित है, जो आर्थिक क्रिया से संबंधित महत्वपूर्ण कारकों से प्रभावित होता है। समष्टि अर्थशास्त्र में अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण आर्थिक समुच्चयों का अध्ययन होता है। इसको सामान्य संतुलन विश्लेषण कहते हैं।

5. विश्लेषण तथ्यों में अंतर : व्यष्टि अर्थशास्त्र में आर्थिक तथ्यों का संतुलन की स्थिति में अध्ययन होता है, जबकि समष्टि अर्थशास्त्र में आर्थिक समुच्चयों के व्यवहार का असंतुलन की स्थिति में अध्ययन होता है।

पाठगत प्रश्न 12.4

बताइए निम्न कथन सत्य/असत्य हैं :

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र में अर्थव्यवस्था के समुच्चयों का अध्ययन होता है।
2. समष्टि अर्थशास्त्र आंशिक संतुलन विश्लेषण का अध्ययन करता है।
3. समष्टि अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी के तथ्य को संबोधित करता है।
4. व्यष्टि अर्थशास्त्र में आर्थिक नीतियों का अध्ययन किया जाता है।

12.6 समष्टि और व्यष्टि अर्थशास्त्र का महत्व

आर्थिक विश्लेषण की दोनों शाखाएं एक-दूसरे की संपूरक और पूरक हैं। इनके व्यवहारिक पक्ष का संबंध अर्थशास्त्र और वाणिज्य से है। व्यष्टि अर्थशास्त्र विश्लेषण के महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं–कृषि अर्थशास्त्र, श्रम अर्थशास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र, उपभोग अर्थशास्त्र, तुलनात्मक अर्थशास्त्र, कल्याणकारी अर्थशास्त्र, क्षेत्रीय अर्थशास्त्र, लोकवित्त के पहलू तथा अन्य क्षेत्र। समष्टि अर्थशास्त्र में आर्थिक नीतियों और कार्यान्वयन, व्यष्टि अर्थशास्त्र की जानकारी, आर्थिक विकास का अध्ययन, कल्याण संबंधित अध्ययन, मुद्रा स्फीति और मुद्रा संकुचन का अध्ययन और अंतर्राष्ट्रीय तुलनात्मक अध्ययन भी शामिल हैं।

आपने क्या सीखा

- वास्तविक अर्थशास्त्र का संबंध 'क्या है' से है, जो तथ्यों पर आधारित है।
- आदर्श अर्थशास्त्र 'क्या होना चाहिए' का अध्ययन करता है और मूल्यगत निर्णयों पर आधरित है।

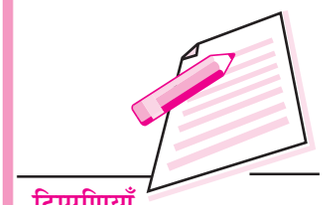

- व्यष्टि अर्थशास्त्र किसी आर्थिक इकाई या अर्थव्यवस्था के किसी भाग या एक से अधिक इकाइयों के छोटे समूह की आर्थिक क्रिया का अध्ययन है।
- समष्टि अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की एक शाखा है, जिसके अंतर्गत संपूर्ण अर्थव्यवस्था या आर्थिक इकाइयों के समुच्चओं का अध्ययन किया जाता है।
- सभी समष्टि अर्थशास्त्रीय अध्ययन व्यष्टि अर्थशास्त्रीय चरों को समझने में सहायक हो सकते हैं। ये अध्ययन आर्थिक नीतियों और कार्यक्रमों के निर्माण में सहायक हो सकते हैं।
- समष्टि और व्यष्टि अर्थशास्त्र में महत्वपूर्ण अंतर हैं–
  1. अध्ययन के पैमाने में अंतर
  2. अध्ययन के क्षेत्र में अंतर
  3. कीमत और आय अवधारणाओं को दिए गए महत्व में अंतर
  4. अध्ययन की विधियों में अंतर
  5. मान्यता में अंतर
  6. व्याख्यात्मक कारकों में अंतर

पाठांत प्रश्न

1. समष्टि अर्थशास्त्र को परिभाषित कीजिए।
2. व्यष्टि अर्थशास्त्र को परिभाषित कीजिए।
3. व्यष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन की क्या उपयोगिता है?
4. समष्टि अर्थशास्त्र और व्यष्टि अर्थशास्त्र में अंतर समझाइए।
5. समष्टि अर्थशास्त्र और व्यष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन के क्षेत्र बताइए।
6. समष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन की क्या उपयोगिता है?
7. वास्तविक तथा आदर्श अर्थशास्त्र में उदाहरणों सहित अंतर समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1

(i) आदर्श

(ii) वास्तविक

(iii) आदर्श

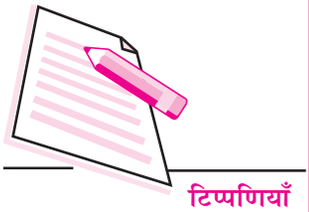

(iv) आदर्श

(v) वास्तविक

12.2

(c) दोनों (अ) और (ब)

12.3

1. जनरल थ्योरी ऑफ इंप्लायमेंट, इंटरेंस्ट एंड मनी

2. (c) मुद्रा स्फीति

12.4

1. असत्य

2. असत्य

3. सत्य

4. असत्य